प्रार्थना

हे भगवान, हे भगवान,
हम बच्चे तेरे नादान।
पढ़-लिखकर हम बने महान,
ऐसा दो हमको वरदान।

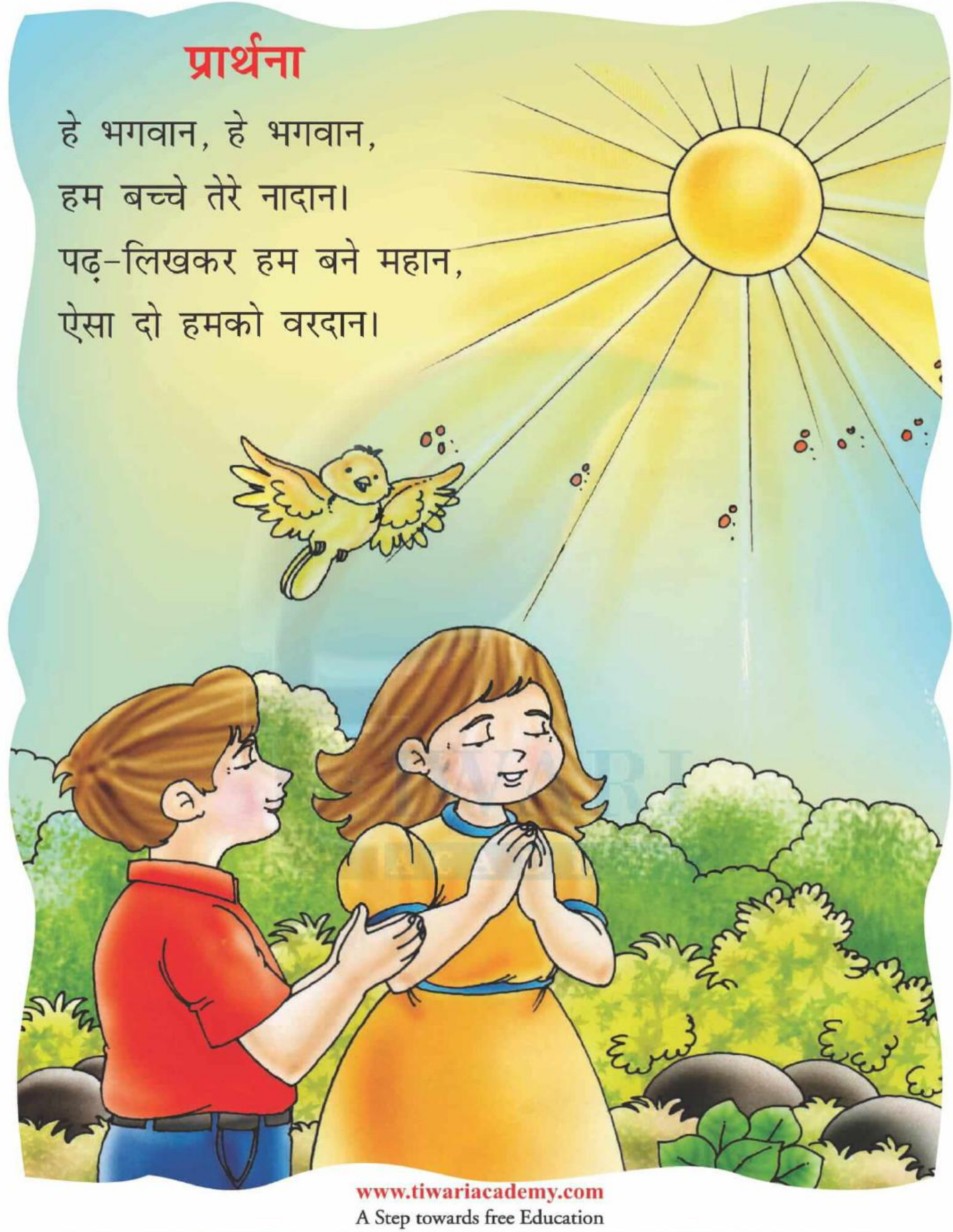

रेल

सरपट-सरपट जाती रेल।
छुक-छुक, छुक-छुक गाती रेल।।
सीटी खुब बजाती रेल।
दादी के घर, नानी के घर,
सबको सैर कराती रेल।।

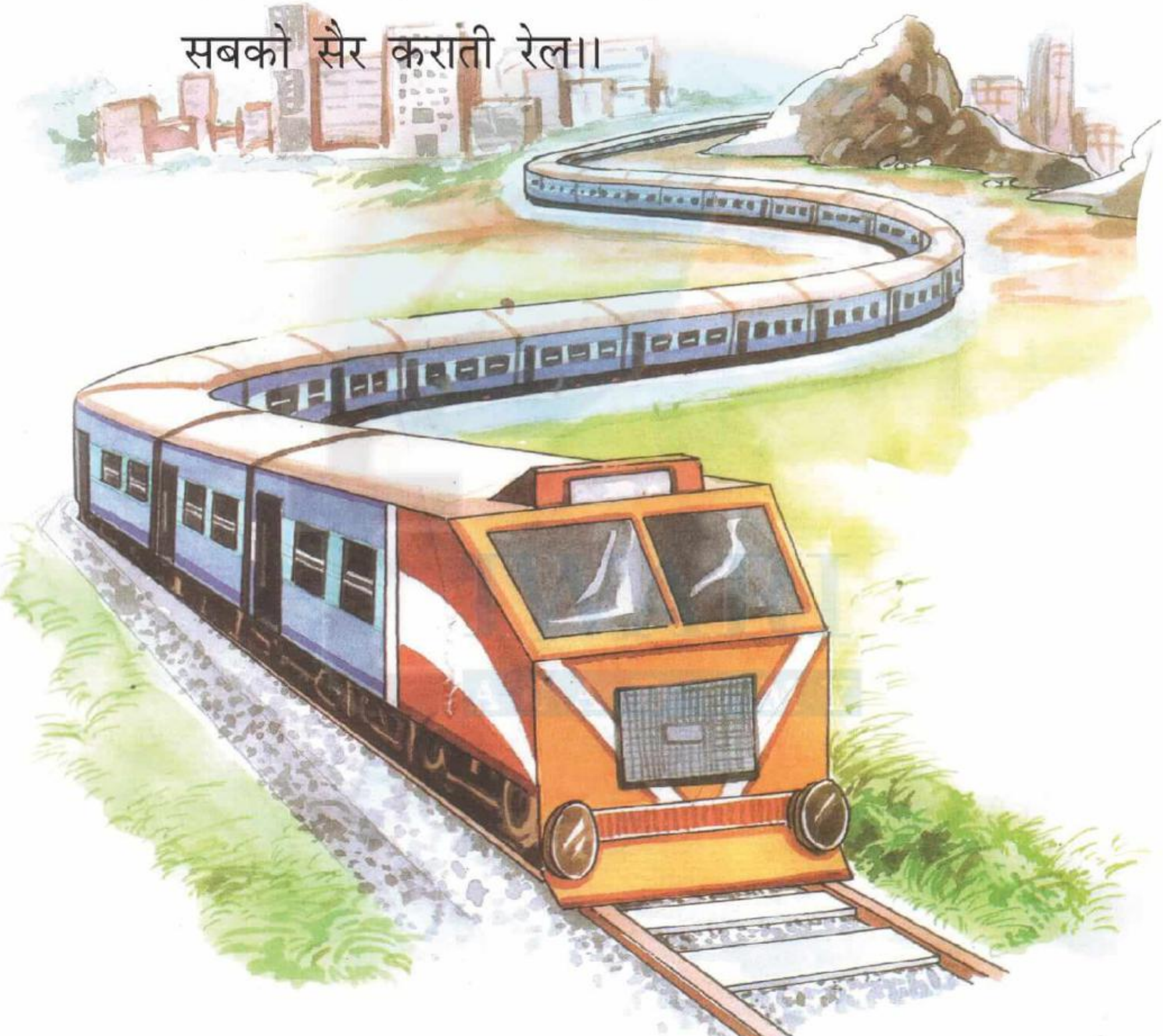

चींटी

चींटी करती मेहनत खूब,
कभी न थकती, सहती धूप।
भार उठाती खुद से ज्यादा,
कभी न भूलती अपना वादा।

बंदर मामा

बंदर मामा पहन पजामा,
ठुमक-ठुमक ससुराल चले।
सिर पर टोपी, गले में माला,
खूब बजाते गाल चले।

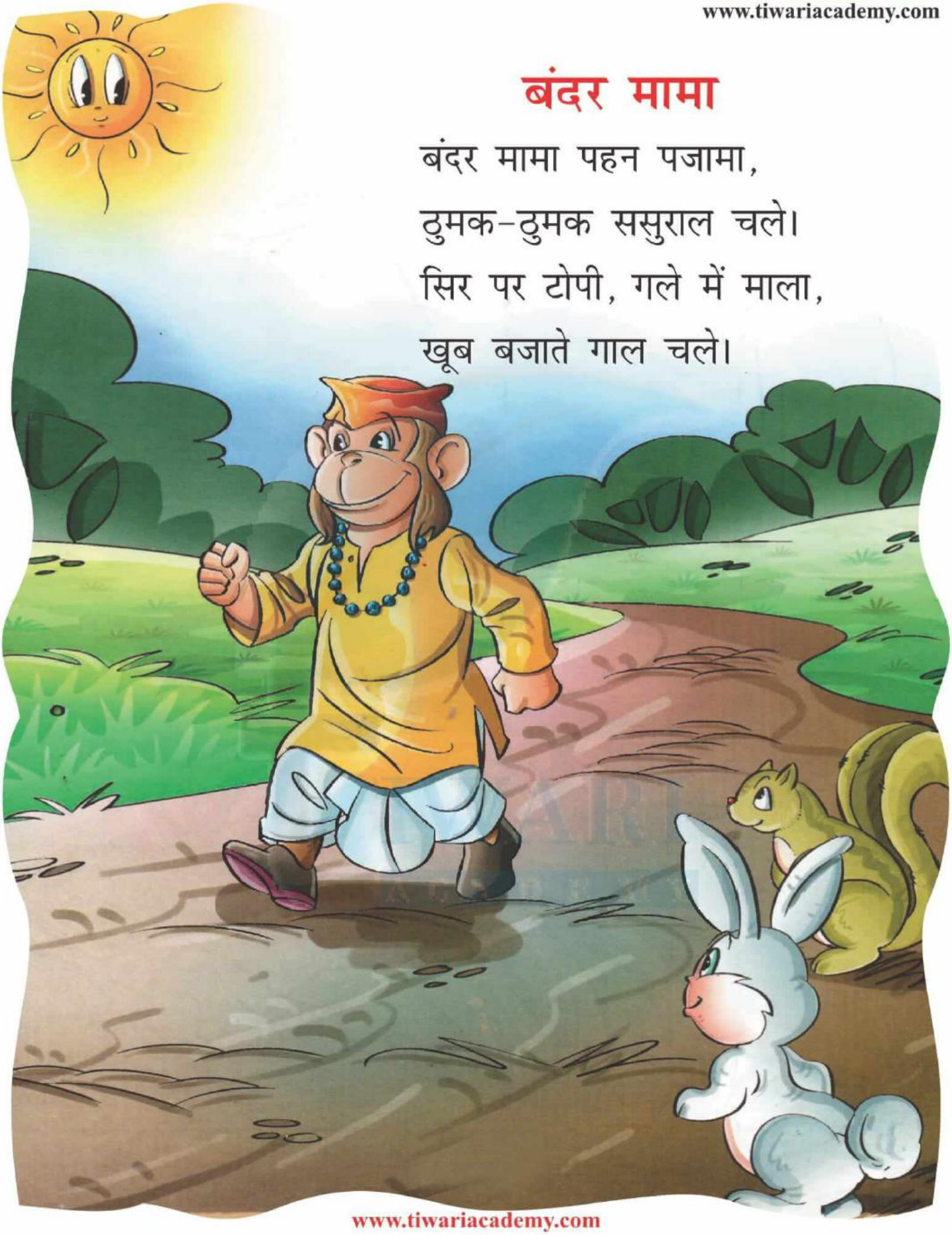

1, 2, 3 ....

1, 2, चल मुँह धो,
3, 4, हो जा तैयार।
5, 6, सब बच्चे,
7, 8, पढ़ लो पाठ।
9, 10, आ गई बस।

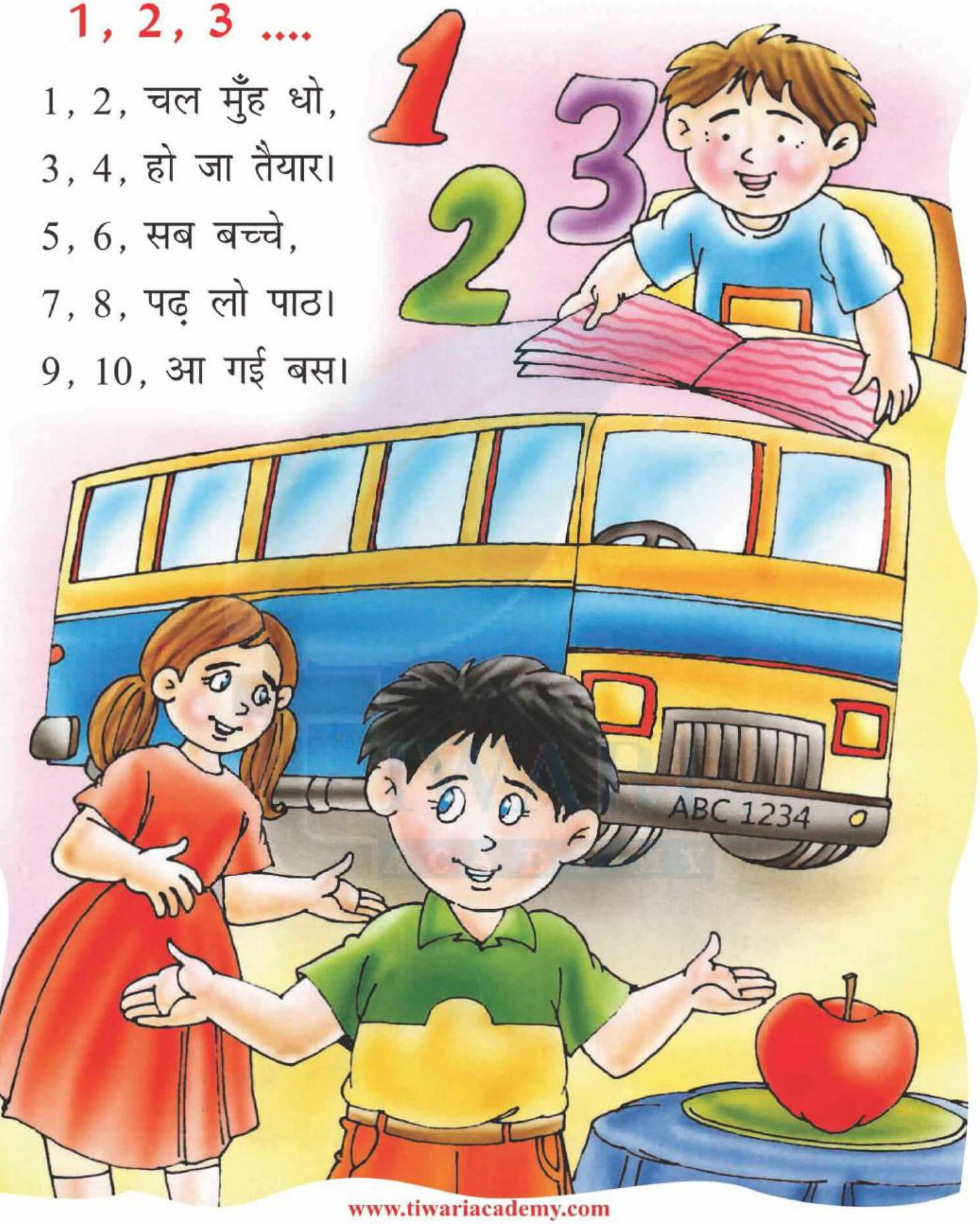

मधुमक्खी

मधुमक्खी फूलों पर जाती,
फूलों का मीठा रस लाती।
छत्ते में फिर उसे सजाती,
हमको मीठा शहद खिलाती।

कमल

कमल है फूलों का राजा,
भँवरा उस पर नाच दिखाता।
तितली आकर ढोल बजाती,
हवा भी गुन-गुन गाना गाती।

मेरी गुड़िया

कितनी सुंदर मेरी गुड़िया,
पर है यह आफत की पुड़िया।
मैं ना खेलूँ तो रोती है,
बस मेरे ही संग सोती है।

दीपक

दीपक हरदम जलता रहता,
रौशन जग को करता रहता।
अंधियारों से लड़ता रहता,
हार ना मानो कहता रहता।

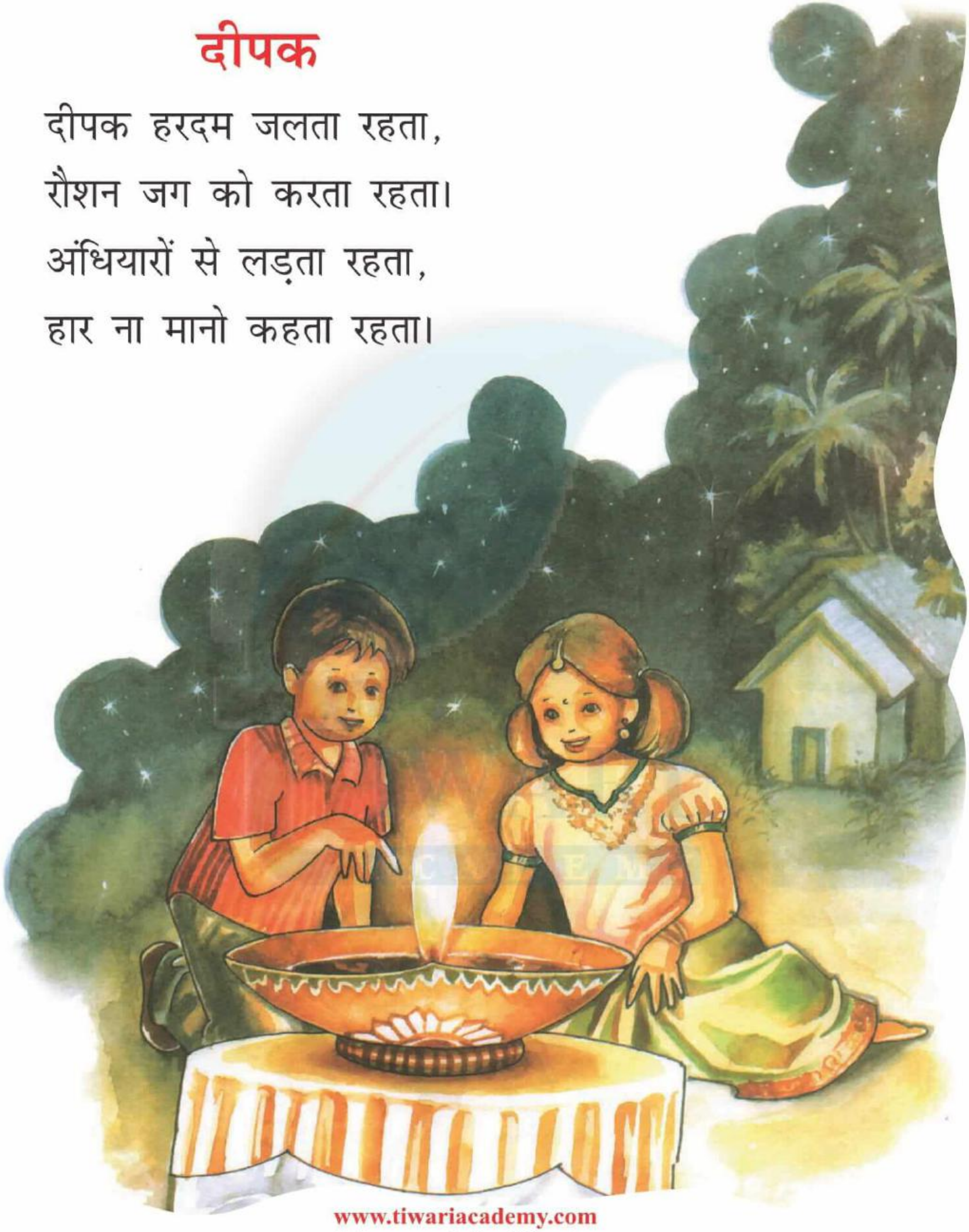

तितली

हरी, गुलाबी, नीली, पीली,
प्यारे पंखों वाली तितली।
फूलों से करती ये प्यार,
कितना सुन्दर इनका संसार।
बच्चों करो तुम इनसे प्यार,
इनपर करो कभी न वार।

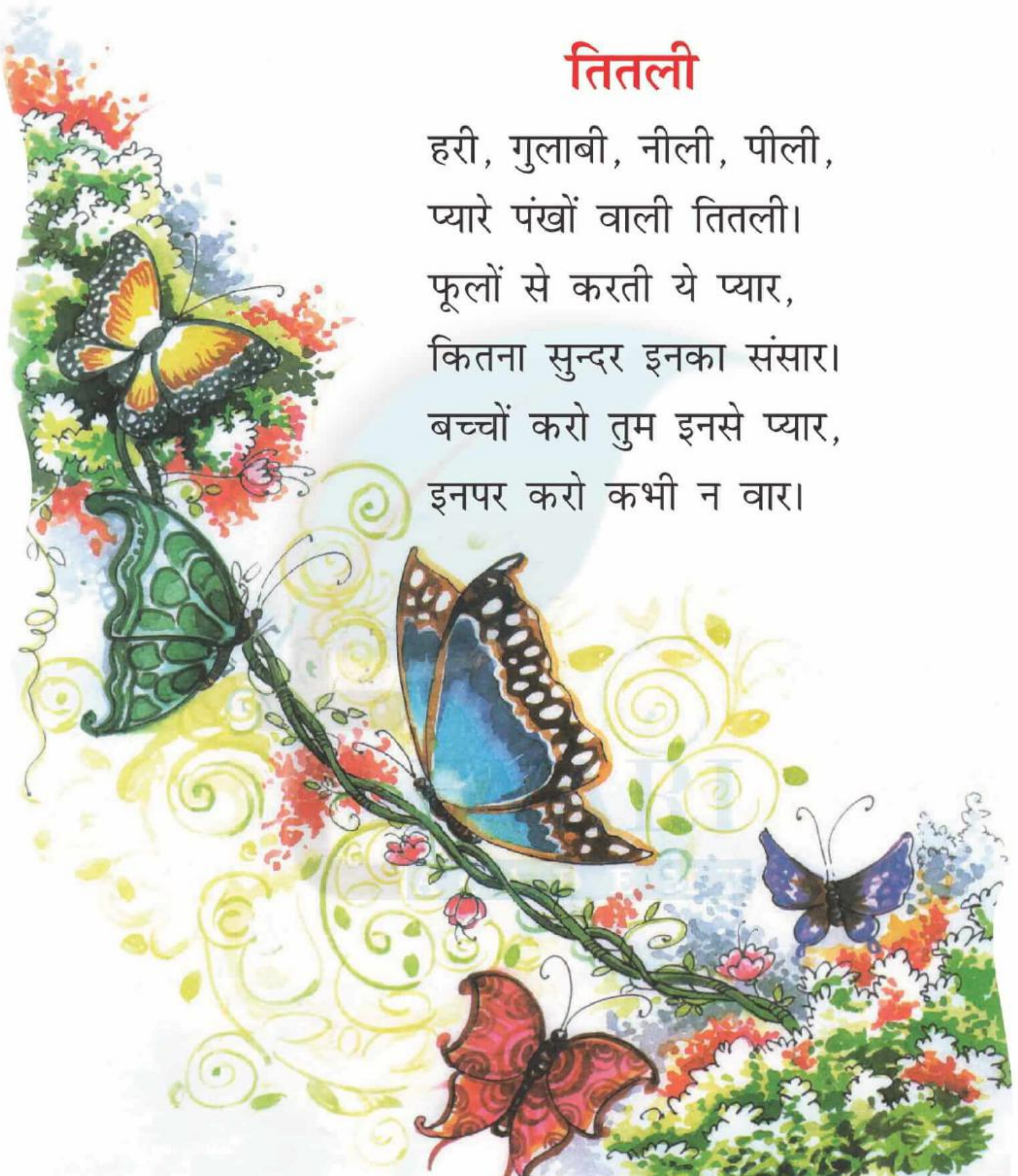

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे रहते साफ,
गंदी करते नहीं किताब।
कभी नहीं रोते चिल्लाते,
पाठशाला से पढ़कर आते।

मेरा घर

कितना सुंदर मेरा घर,
सबसे न्यारा मेरा घर।
बाग-बगीचे वाला घर,
सबको अच्छा लगता घर।।

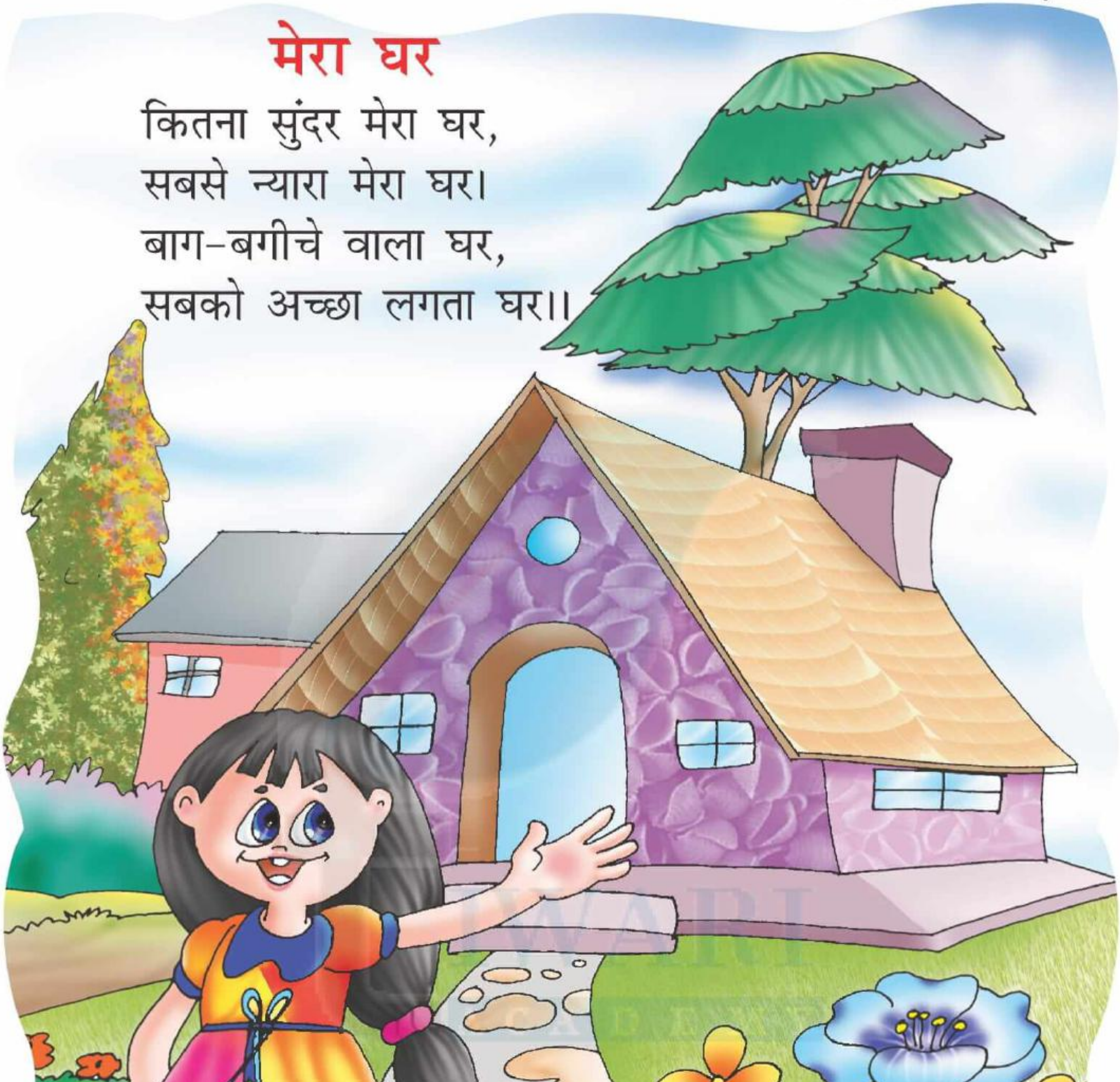

प्रकृति

जागो बच्चो हुआ सवेरा
मुर्गा देता बाँग है।
निखर गई सूरज की किरणें
कलियों की जो जान है।
भँवरे जो मँडराते इनपर
दिनभर गाते गान है।
हरे-भरे झूमते पौधे
प्रकृति की शान है।

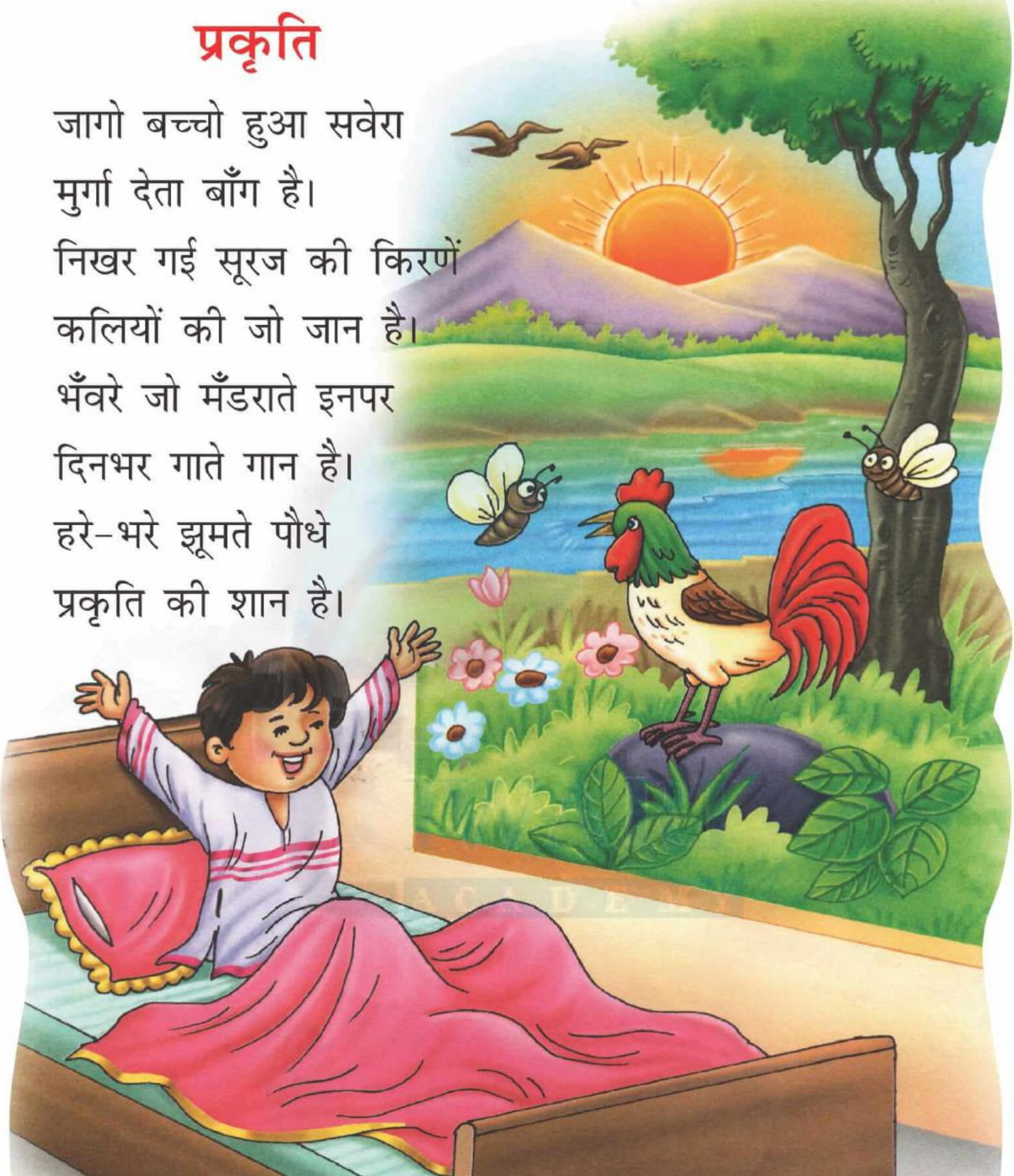

बसंत ऋतु

जैसे ही बसंत ऋतु आती है,
धरती फूलों से भर जाती है,
पेड़-पौधे फूलों से भर जाते हैं,
कई रंगों के फूल खिल जाते हैं,
हवा में खुशबू भर जाती है,
धरती बहुत सुन्दर हो जाती है।

मेंढ़क राजा

मेंढ़क राजा छाताधारी,
कछुए की कर रहे सवारी।
खेल खेलते बारी-बारी,
एक दूसरा करे सवारी।
मेंढ़क जा कूदा पानी में,
जब कछुए की आई बारी।

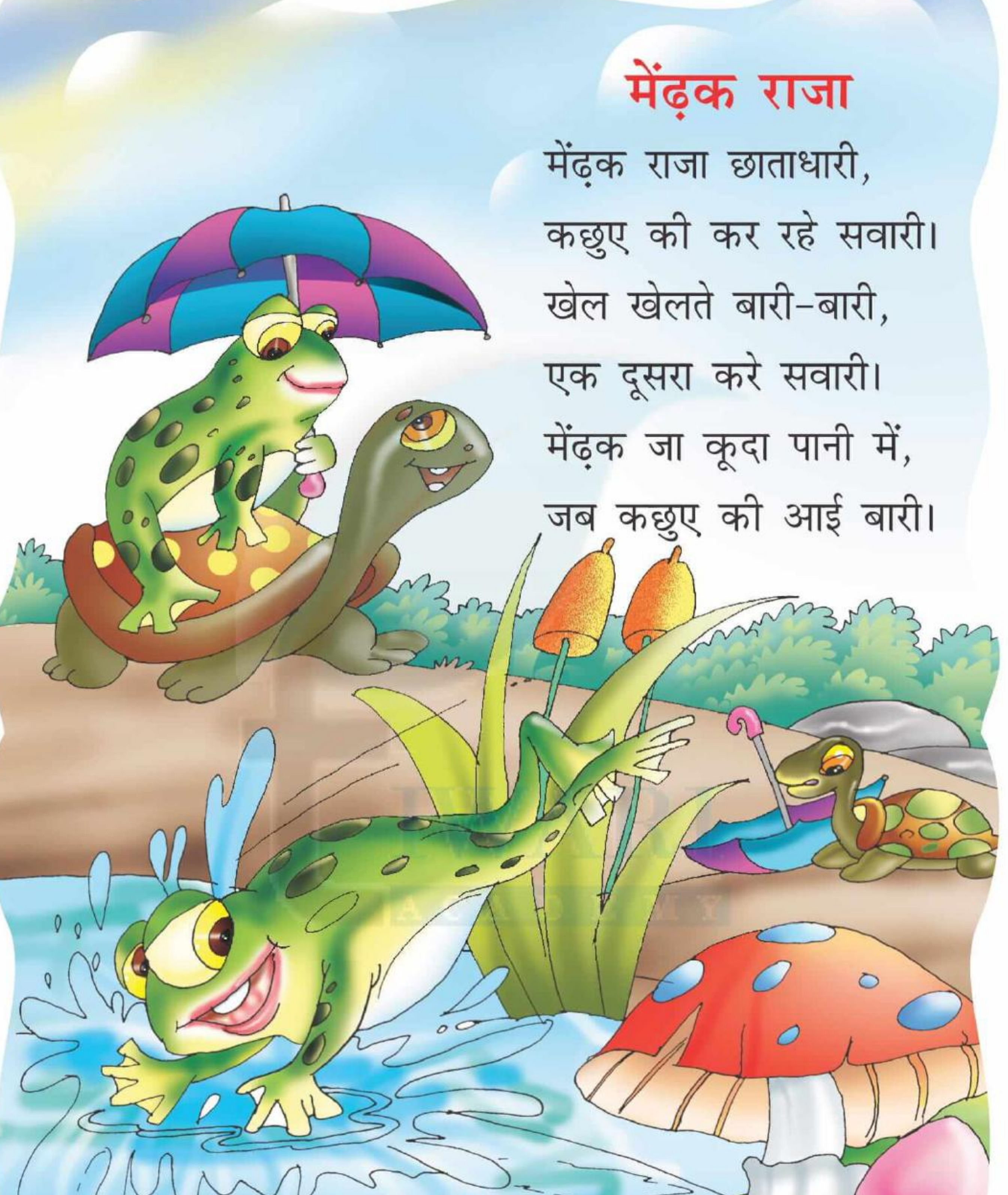

टेलीफोन

हैलो डॉक्टर! हैलो डॉक्टर!
पापा चले गए हैं दफ़्तर।
मेरी गुड़िया है बीमार,
कल से इसको तेज़ बुखार।
कृपा करें जल्दी आ जाएँ,
इन नन्हीं की जान बचाएँ।।

लकड़ी का घोड़ा

लकड़ी का है मेरा घोड़ा,
कभी न खाता है यह कोड़ा।
बिन रोटी के, बिन पानी के,
मुझको सैर कराता घोड़ा।
एक जगह ही टप-टप करता,
फिर भी लगता दौड़े घोड़ा।

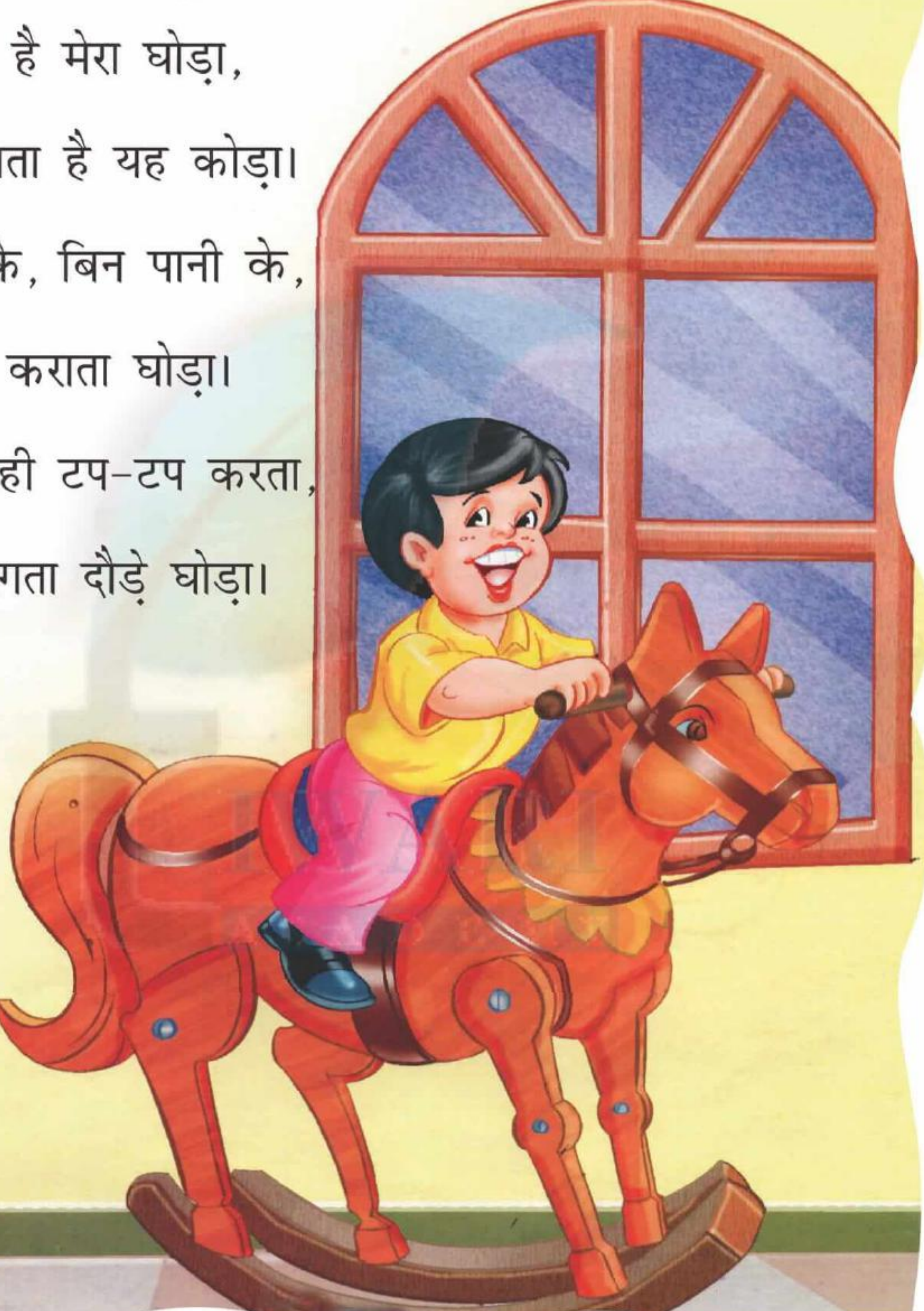

मकड़ी

बाहर एक पुरानी लकड़ी,
उसमें रहती मोटी मकड़ी।
एक दिन ऐंजल माँ से रूठी,
जाकर उस लकड़ी पर बैठी।
लकड़ी में से मकड़ी निकली,
ऐंजल डर से ऐसे उछली।